ગરસૂરિ
ર,
ધીનગર

मई १९८३
वर्ष ७ : अंक १

तित्थयर

बनारसी साड़ी

इण्डियन सिल्क हाउस

कॉलेज स्ट्रीट मार्केट • कलकत्ता-१२

Prakash Trading Company

12 INDIA EXCHANGE PLACE
CALCUTTA-700001

Gram: PEARLMOON

Telephone: 22-4110
22-3323

The Bikaner Woollen Mills

Manufacturer and Exporter of Superior Quality
Woollen Yarn, Carpet Yarn and Superior
Quality Handknotted Carpets

Office and Sales Office :

BIKANER WOOLLEN MILLS

Post Box No. 24
Bikaner, Rajasthan
Phones : Off. 3204
Res. 3356

Main Office :

4 Meer Bohar Ghat Street
Calcutta-700007
Phone : 33-5969

Branch Office :

Srinath Katra : Bhadhoi
Phone : 378

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्र

वर्ष ७ : अंक १

मई १९८३

□

संपादन

गणेश ललवानी

राजकुमारी बेगानी

□

आजीवन : एक सौ एक

वार्षिक शुल्क : दस रुपये

प्रस्तुत अंक : एक रुपया

□

प्रकाशक

जैन भवन

पी - २५ कलाकार स्ट्रीट

कलकत्ता-७००००७

□

मुद्रक

सुराना प्रिन्टिग वर्क्स

२०५ रवीन्द्र सरणी

कलकत्ता-७००००७

सूची

प्राचीनतम् सराक संस्कृति का निदर्शन पाड़ा का मन्दिर ५

श्री जिन मुक्ति सूरिजी को खाजुराम मोदी द्वारा प्रेषित विनती पत्र ११

अर्द्ध कथानक २६

जैन पत्र-पत्रिकाएँ : कहाँ/क्या ३२

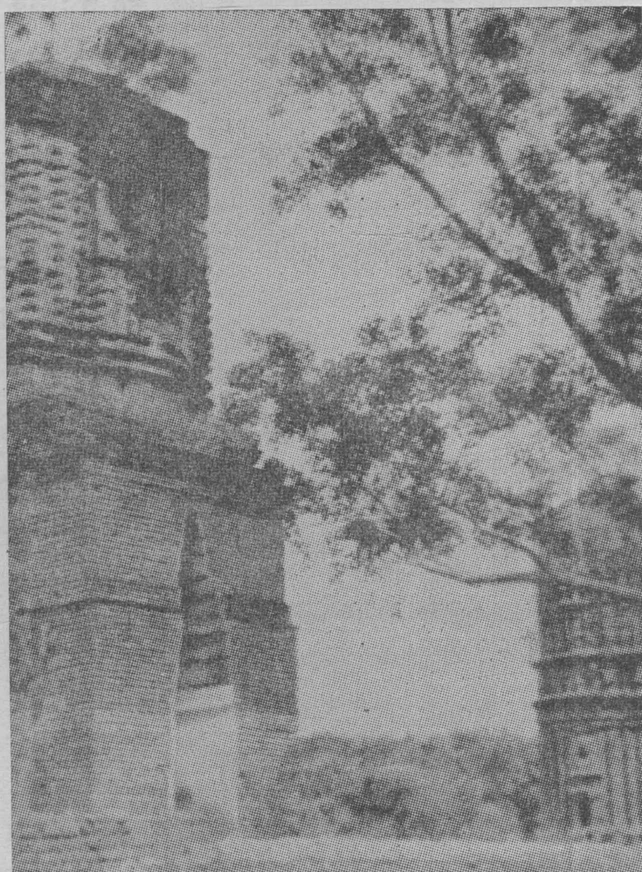

यहाँ दो प्राचीन मन्दिरों का सन्धान मिल रहा है। इनमें एक पाषाण निर्मित है और दूसरा ईंट द्वारा निर्मित। पृ० ५

प्राचीनतम् सराक संस्कृति का निदर्शन पाड़ा का मन्दिर

श्रीयुधिष्ठिर माजी

गाँव का नाम है पाड़ा। प्रायः दो ढाई हजार वर्ष की सराक संस्कृति से विजड़ित। पश्चिम बंगाल का प्राचीनतम् मन्दिर यहीं है। केवल पश्चिम बंगाल ही नहीं समस्त भारतवर्ष के प्राचीन मन्दिरों में पाड़ा का यह मन्दिर अन्यतम् है।

अन्य एक प्रबन्ध में मैंने यह बताया था कि यहाँ दो प्राचीन मन्दिरों का सन्धान मिल रहा है। इनमें एक पाषाण निर्मित है और दूसरा ईंट द्वारा निर्मित। सम्भवतः एक और पाषाण निर्मित मन्दिर भी था जो कि टूट गया है और इसी के शिलाखण्ड से रघुनाथ जी के मन्दिर का निर्माण हुआ है।

पाषाण निर्मित मन्दिर प्राचीनतम् सराक संस्कृति का अमूल्य निदर्शन है। मन्दिर गहरे बादामी रंग के पत्थरों से बना है। इस मन्दिर के निर्माण कौशल में जो एक नवीन तथ्य है वो इस जिले के अन्य सराक जैन मन्दिरों में नहीं पाया जाता। इस मन्दिर के प्रत्येक पाषाण-खण्ड के मध्य छिद्रकर लोहे के छड़ से उसे गूंथकर निर्मित किया गया है। अतः किसी भी पत्थर को निकालना कठिन-सा है। मन्दिर के निर्माण में लोहे का यह व्यवहार गवेषकों को मन्दिर का समय निर्णय करने में अवश्य सहायक बनेगा।

मन्दिर के पाषाण और शिल्प कला के वैशिष्ट्य की विवेचना करने से ही पता चल सकता है कि यह मन्दिर आज से प्रायः डेढ़ हजार वर्ष पूर्व निर्मित हुआ था। कइयों का तो अनुमान है कि यह मन्दिर अढ़ाई हजार वर्ष पुराना है। श्रीयुत् प्रसित कुमार राय चौधरी ने अपने ग्रन्थ 'बंग संस्कृतिर कथा' में लिखा है—'ये सराक ही जिले के प्राचीनतम् निवासी हैं। प्रायः अढ़ाई हजार वर्ष पूर्व निर्मित मन्दिरों के ध्वंशावशेष आज भी पाड़ा, वड़ाम आदि स्थानों में पाये जाते हैं।' [१] इनकी बात स्वीकार कर लेने पर कहना होगा कि पाड़ा का यह वृद्ध भग्न जीर्ण मन्दिर अढ़ाई हजार वर्ष पूर्व से सराक संस्कृति के उत्थान-पतन के साक्षी रूप में पुरुलिया की धरती पर अब भी खड़ा है। यद्यपि महाकाल के स्रोत में मिट गये हैं देह के अलंकार, क्षय हो गये हैं देह के सर्वाङ्ग, विवर्ण हो गया है रंग फिर भी महाकाल के इस महासमुद्र में एक आलोक स्तम्भ की तरह सराक सम्प्रदाय के मनुष्यों को दिक् निर्णय

[१] बंग संस्कृतिर कथा, पृ० ६४।

करता हुआ यह कह रहा है—मैं इतिहास बनकर आज भी बचा हुआ हूँ। डर क्या ? अतीत ही तुम्हें पथ दिखाएगा।

पाड़ा के इस प्राचीनतम् मन्दिर की समस्त देह सुन्दर अलंकारों से विभूषित थी। महाकाल के स्रोत में बहते-बहते वे आज घिस कर समाप्तप्रायः हो गए हैं। फिर भी किसी-किसी स्थान पर जो कुछ सामान्य से अवशिष्ट हैं उन्हें देखकर भी हम विस्मय से हतवाक् हुये बिना नहीं रह सकते। पाषाण-खण्डों को काटकर इतने सुन्दर शिल्प नैपुण्य से समृद्ध भास्कर्य शिल्प के ये निदर्शन जो लोग छोड़ गए हैं, हम उनकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह पाते। मन्दिर के कलेवर पर अलंकरणों के मध्य नृत्यरता नारियों को छन्दमय देह-भंगिमा देखकर नयन और मन सार्थक हो जाते हैं। न जाने किस काल के हृदय से उत्पन्न हुआ है यह मनोहर नृत्य छन्द ? किन्तु अतीत के वाक्यहीन ये नृत्य छन्द एक क्षण के लिये मन को झकझोर देते हैं। अतीत की अस्पष्ट स्मृति की तरह मन को दोलायित कर देती है। मन्दिर की देह पर है यक्षिणी मूर्ति, अश्वारोही पुरुष, ध्यानमग्न तीर्थंकर। किसी-किसी स्थान पर कहानी चित्र भी मिलते हैं। मन्दिर के पीछे की ओर क्षय होता हुआ एक कहानी चित्र है। ऊपर है किसी जैन शासन देवता की चतुर्भुज मूर्ति। बीच में है लेटी हुई अवस्था में किसी पुरुष की मूर्ति। नीचे है अपूर्व भंगिमा में एक नारी मूर्ति। नहीं जानता किस विषय-वस्तु की प्रेरणा से ये चित्र कठोर शिला-खण्डों पर उत्कीर्ण किए गए थे। मन्दिर के बाहर तीन ओर तीन देहरियों के आकार के छोटे प्रकोष्ठ हैं। इन प्रकोष्ठों के दोनों ओर हाथ में चँवर लिए दो नारी मूर्तियाँ खड़ी हुई हैं। सम्भवतः इन सब स्थानों में छोटे आकार की तीर्थंकर मूर्तियाँ रखी हुई थीं। वर्तमान में वे अपसारित हो गयी हैं। इसके अतिरिक्त और भी नर-नारियों की मूर्तियाँ खुदी हुई हैं। मूर्तियाँ पाँच-छः इन्च से आठ इन्च पर्यन्त लम्बी हैं। अधिकांश मूर्तियाँ नीचे की ओर हैं। शायद ऊपरी मूर्तियाँ नष्ट हो गयी हैं।

जीव जन्तुओं की मूर्तियों में घोड़ा, हाथी और सिंह मूर्तियाँ हैं। एक स्थान पर एक घोड़ा मनुष्य की भाँति दो पैरों पर नृत्य कर रहा है। घोड़े के नीचे का हिस्सा प्रायः मनुष्य जैसा ही है। इसके अलावा पाड़ा के इस प्राचीनतम् मन्दिर के कलेवर पर विभिन्न प्रकार के नक्शा जातीय चित्र भी हैं। नक्शा जातीय भास्कर्य शिल्प-कलाएँ ज्यामितिक आकार में निर्मित है। इनमें फूल-फल जातीय कुछ नहीं है। प्रतिमा देह पर चन्द्रमाला की

न जाने किस काल के हृदय से उत्पन्न हुआ है यह मनोहर नृत्यछन्द ? पृ० ६

भांति ये सब अलंकार मन्दिर को अलंकृत कर रहे हैं। पहले नृत्यरता नारी मूर्तियाँ, इनके नीचे नक्शा जातीय चित्र, इसके नीचे जैन शासन देवी या यक्षिणी मूर्ति है। अवश्य ही इनमें आज एक भी मूर्ति अक्षत नहीं है। इस क्षत-विक्षत शिल्प कला के अपूर्व निदर्शन के मध्य ही सराक संस्कृति की बिलक्षणता को खोजना होगा। खोजना होगा अतीत का अविस्मरणीय भास्कर्य शिल्प का इतिहास।

पाड़ा के इस प्राचीनतम् मन्दिर के भास्कर्य शिल्प के साथ एक मात्र पाकविड़रा में प्राप्त कुछ शिल्पकला के अतिरिक्त और किसी भी मन्दिर पर बने शिल्प का मेल नहीं है। पश्चिम सीमान्त बंगाल के सराक संस्कृति के साथ जड़ित मन्दिरों के मध्य एक मात्र बराकर के मन्दिर के अलंकरण ही अक्षत् है। किन्तु पाड़ा के इस मन्दिर पर बने अलंकरणों के साथ बराकर मन्दिर के भास्कर्य शिल्प में कोई समानता नहीं है। यहाँ तक कि मन्दिर के शिलाखण्ड भी अन्य जाति के हैं, गहरे बादामी रंग के ये मूल्यवान पत्थर अवश्य ही बाहर से मँगवाए गए थे। फिर इस मन्दिर के पत्थरों के टुकड़े

अन्यान्य जैन मन्दिरों के पाषाण-खण्डों से काफी छोटे भी हैं। ये दो से तीन फुट पर्यन्त लम्बे और एक फुट करीब चौड़े हैं। साधारण भाव से देखने पर काले रंग के बलुई पत्थर-से लगते हैं। किन्तु पत्थर बहुत सख्त है। सख्त होने के कारण ही तो दो हजार वर्ष से संघर्षरत रहते हुए भी वह किसी प्रकार आज तक टिका हुआ है।

'सराक संस्कृति का पीठ स्थान पाकविड़रा' नामक प्रबन्ध में मैंने कहा है कि इस पाड़ा के मन्दिर का एक मॉडेल (miniature temple) पाकविड़रा में है। पाड़ा मन्दिर के टूटे-फूटे शिला-खण्डों को हटाकर दो पत्थरों के संयोग स्थल पर (जहाँ जल और हवा का कम प्रभाव पड़ता है ऐसे सब स्थान) जिन अलंकरणों के अंश विशेष दृष्टिगत होते हैं उन सब भास्कर्यों की शिल्प पद्धति सम्पूर्ण रूप से पाकविड़रा के इस मॉडेल को स्मरण करवा देती है। मॉडेल, पत्थर की जाति भी प्रायः एक-सी है। किन्तु हाँ, मन्दिर कलेवर के अलंकरणों के साथ इस मॉडेल का मेल नहीं बैठता है।

पाड़ा के इस प्राचीनतम् मन्दिर के इन सब अलंकरणों और भास्कर्य शिल्प के निदर्शनों को देखने पर एक प्रश्न जाग्रत होता है कि शिल्पी ने इतने छोटे आकार की मूर्ति मन्दिर कलेवर पर क्यों उत्कीर्ण की ?

ये सब मूर्तियाँ दूर से दिखाई नहीं पड़तीं। यहाँ तक कि ऊपर के चित्र भी नीचे से अच्छी तरह दिखाई नहीं देते। यद्यपि इन प्रश्नों का सठीक जबाव देना सम्भव नहीं है फिर भी कहा जा सकता है कि प्राचीन मन्दिरों के अलंकरणों की यही एक प्रकार की रीति थी। प्रसंगवश कहा जा सकता है कि पाकविड़रा में जिस अष्टभुजा नारी मूर्ति का सन्धान पाया गया है उसका आकार भी इतना ही छोटा है। मयूर पीठ पर बैठी इस अष्टभुजा देवी का निर्माण कौशल पाड़ा मन्दिर की उन सब छोटी-छोटी मूर्तियों की शिल्प पद्धति से मेल खाता है। दोनों ही स्थान की इन सब शिल्प कलाओं का मान बहुत ऊँचा है। यदि मन्दिर अक्षत रहता तो कोणार्क के सूर्य मन्दिर की भाँति यह भी शिल्प रसिकों के आकर्षण का प्रधान केन्द्र बनता। कोणार्क के सूर्य मन्दिर की दीवारों पर भी ऐसी ही कुछ छोटे आकार की मूर्तियाँ दिखायी पड़ती हैं।

पाड़ा के उस विख्यात् मन्दिर की ऊँचाई प्रायः चालीस फुट है। मन्दिर के ऊपर बने धर्मचक्र का आधा हिस्सा तो टूट गया है। अवशेष छोटे-छोटे लता पौधों से ढँका हुआ है। प्रवेश-पथ है आयताकार। गर्भगृह

बहुत छोटा है। गाँव के लोग इस मन्दिर को लक्ष्मी मन्दिर के रूप में जानते हैं। किन्तु मन्दिर में कोई मूर्ति नहीं है।

शायद राजा मानसिंह के समय मन्दिर का कुछ संस्कार हुआ होगा। किन्तु संस्कार के कोई निदर्शन नहीं मिलते। क्योंकि यदि अतीत में इसका कोई जीर्णोद्धार हुआ होता तो मन्दिर इस प्रकार अवलुप्ति के पथ पर नहीं जाता।

इस मन्दिर से कुछ मीटर की दूरी पर पश्चिम में पाड़ा का दूसरा मन्दिर है। किन्तु यह खूब प्राचीन नहीं है। अधिक से अधिक हजार वर्ष पूर्व इस मन्दिर का निर्माण हुआ होगा। यह मन्दिर ईंट का बना हुआ है। इसकी ऊँचाई प्रायः ४५ फुट है। मन्दिर का ऊपरी हिस्सा टूट गया है। अतः वहाँ पेड़-पौधे सिर उठाकर खड़े हुये हैं। इस मन्दिर का आकार, निर्माण कौशल, अलंकरण इत्यादि बहुत-सी चीजें देउलघाटा के मन्दिर जैसी है। मन्दिर की बाहरी दीवारों पर, जलायी हुई ईंटों पर पलस्तर चढ़ा कर नक्शा जातीय अलंकरण बनाये गए हैं। शिल्पकला की यह पद्धति देउलघाटा के मन्दिर की अलंकरण पद्धति से मिलती-जुलती है।

करीब सौ वर्ष पूर्व शायद इस मन्दिर पर प्रचुर अलंकरण थे। किन्तु वर्तमान में पलस्तर टूट जाने से अलंकरण नष्ट हो गये। इस मन्दिर का प्रवेश पथ देउलघाटा मन्दिर के प्रवेश पथ की भाँति त्रिकोणाकार और आकार में काफी बड़ा है। पाड़ा के इस मन्दिर को देउलघाटा के मन्दिर की कार्बन कापी कह सकते हैं। किन्तु मन्दिर की ईंटों के आकार में प्रचुर पार्थक्य है। यहाँ ईंटें देउलघाटा मन्दिर की ईंटों की तरह न बड़ी है न सख्त है। ये देखने में प्रायः वर्तमान काल की साधारण ईंटों की ही भाँति हैं। अतः लगता है देउलघाटा के मन्दिर पाड़ा के इस मन्दिर से अधिक प्राचीनतम् है।

यह मन्दिर लोगों में उदय चण्डी का मन्दिर नाम से विख्यात् है। गर्भगृह में चण्डी देवी की एक भग्न मूर्ति है। किन्तु मूर्ति छोटी है, मात्र एक फुट लम्बी। भास्कर्य शिल्प के दृष्टिकोण से भी उल्लेखयोग्य नहीं है।

पाड़ा के तृतीय मन्दिर का आकार कैसा था, यह आज नहीं बताया जा सकता। कई सौ वर्ष पूर्व ही मन्दिर टूट गया था या तोड़ दिया गया था। इस मन्दिर के पत्थरों से ही गाँव के पश्चिम प्रान्त में एक मन्दिर निर्मित हुआ है। वर्तमान में यह मन्दिर रघुनाथ जी के मन्दिर के रूप में जाना जाता है। सम्भवतः अतीत के सराक जैन मन्दिर के पत्थरों से इस मन्दिर को पूर्ण करना

सम्भव नहीं था। अतः पत्थरों के अभाव में मन्दिर का ऊपरी भाग ईंटों से तैयार किया गया है। इस मन्दिर के पाषाणों पर जहाँ-तहाँ कुछ अलंकरण प्राप्त होते हैं। इन सब अलंकरणों से ही प्रमाणित होता है, इन पत्थरों को सराक जैन मन्दिर से हटाकर यहाँ लगाया गया है।

इसी किस्म का एक मन्दिर बुधपुर में भी है। बुधपुर के बुद्धेश्वर मन्दिर का निर्माण वहाँ के सराक जैन मन्दिरों के पत्थरों से ही हुआ है। यहाँ तक कि बुद्धेश्वर मन्दिर का शिवलिंग भी असल में प्राचीन सराक जैन मन्दिर का ही टूटा हुआ स्तम्भ है। इसी भाँति का एक शिवलिंग पाड़ा के इस ईंट के मन्दिर में भी है।

पाड़ा में कई तीर्थंकर मूर्तियाँ थीं। किन्तु वर्तमान में अब दिखाई नहीं पड़तीं। शायद काशीपुर के राज्य परिवार के लोग उन्हें यहाँ से ले गए। रंकिणी और झंकिणी की मूर्तियाँ भी इस समय वहाँ नहीं है। प्राचीन पाषाण मन्दिरों पर जो सब यक्ष-यक्षिणियों की या नारी मूर्तियाँ थीं ग्रामीणों के मत में वे ही रंकिणी और झंकिणी की मूर्तियाँ थीं।

पाड़ा का यह पाषाण मन्दिर पुरुलिया एवं पश्चिम बंगाल का गौरव है। डेढ़-दो हजार वर्षों से यह अपने बचाव के लिए संघर्ष करता आ रहा है। अब तो यह ध्वंश पथ का यात्री है। फिर भी हारा नहीं है। आज भी यह हमारे नेत्रों के सम्मुख अतीत युग के गौरवमय भास्कर्य शिल्प-निदर्शन को प्रस्तुत करता है। आज भी इसकी देह पर उत्कीर्ण क्षयप्राप्त अतुलनीय नारी-मूर्तियाँ, अश्वारोही पुरुष-मूर्तियाँ और भग्नदेह तीर्थंकर मूर्तियाँ अतीत के शिल्प का गौरव गान गा रही है। नृत्यरता नारी-देह नृत्य छन्द में अतीत के इतिहास को रूपायित कर रही है। अतीत बार-बार छिप-छिप कर कुछ कह जाता है। कोई उसको सुन पाता है, कोई नहीं। फिर भी वह वर्तमान के मनुष्यों को अतीत का वह सुमधुर गीत सुनाता रहता है।

श्री समेत शिखर जी के सम्बन्ध में श्री जिनमुक्ति सूरि जी को खाजूराम मोदी द्वारा प्रेषित विनती पत्र

[जैनधर्म का पत्र साहित्य बहुत विशाल है जिसमें जैनाचार्यों के चातुर्मास, तीर्थयात्रा, धर्मध्यान, तपश्चर्या, प्रभावना आदि का विशद् इतिहास भरा पड़ा है। इसकी अनेक विधाएँ हैं जिनमें खण्ड काव्य, चित्र काव्य, गद्य पद्यादि, संस्कृत प्राकृत और भाषा में विशद् रूप से उपलब्ध है। लगभग ५५ वर्ष पूर्व मैंने जब पत्रों को संग्रह करना प्रारंभ किया तो हजारों यतिजनों को दिये आदेशपत्र, बीसों राजाओं के खास रूक्के, विनतीपत्र आदि का संग्रह हो गया। इन पत्रों में विविध इतिहास सामग्री भरी पड़ी है। यहाँ लिखने का स्थान नहीं है। महातीर्थ समेत शिखर जी के विषय में इतिहास की जानकारी अपेक्षित होने से हमारे संग्रह का एक पत्र जो १६ पृष्ठों में लिखा हुआ है, इसके लिखने वाले खाजूराम मोदी कलकत्ता की बांसतल्ला गली में निवास करते थे और उन्होंने तीर्थ की सेवा में वर्षों बिताये थे, श्रीपूज्यजी श्री जिनमुक्ति-सूरि जी महाराज को जैसलमेर पत्र भेजा और साथ में स्वनामधन्य खरतर गच्छ विभूषण श्री मोहनलाल जी महाराज का भी एक पत्र है अपनी ओर से श्रावक खाजूराम मोदी के पत्र पर गौर करके यथोचित सक्रिय सहयोग के लिए सिफारिश की है। उस समय श्री मोहनलाल जी महाराज कलकत्ता के आदेशी यति थे। उसी वर्ष वे क्रियोद्धार करके जैन शासन की सेवा में अपने को समर्पित कर राजस्थान गुजरात आदि में विचरने लगे थे।

इस पत्र में तीर्थाधिराज के सम्बन्ध में अच्छी जानकारी मिली है जो इतिहास के लिए उपयोगी है। मोदी जी ने अपने पास समेत शिखर जी के प्रचुर कागजात रखे थे। अब उन बातों को एक सौ दश वर्ष हो गये, अतः उसका अनुसन्धान मिलना प्रायः असंभव सा है। मोदी जी कहाँ के थे, उनका वंशज कोई, कहाँ रहता है यह पता लगाना आवश्यक है। यह पत्र इतिहास की एक अमूल्य निधि है। —भँवरलाल नाहटा]

॥स्वस्ति श्री पार्श्व जिन प्रणम्य श्री जेशलमेर शुभ स्थाने सर्वोपम विराजमान बर प्रधान गुणे करी शोभित एकविध असंयम निवारको दुविध धर्म प्ररूपक रत्नत्रयना धारणहार च्यार कषाय निवारक पंच प्रमाद जीपक षट काय रक्षक सप्त भय निवारक अष्टमद जीपक नव वाड़ ब्रह्मचर्य रक्षक दशविध जतीधर्मना धारणहार इग्यारे प्रतिमा परिज्ञान द्वादश प्रतिमाभि भिक्षुकिजणा

इत्यादि अनेक गुणे करि विराजमान जंगम युगप्रधान भट्टारक श्री श्री १००८ श्री श्री श्री जिनमुक्ति सूरीश्वरान् लिखी कलकत्ता सें सदा आज्ञाकारी श्रावक मोदी खाजूराम सपरिवार की समय समय वंदना अवधारणाजी। इहाँ हजूर साहेब के चरण कृपा सें आनंद हैं। हजूर साहेब का सदा आनंद चाईगे जीससे दास कुं परमानंद होयजी। श्री श्री आगे पुज्य महाराज्य जी हजूर साहेब गद्दी बैठे बाद कवि दास का खबर लीया नहीं सो दास का कमनसीबी है। बड़े महाराज्य साहेब का इस दास पर जैसा कृपा था सो हजूर साहेब जी सब जानते हैं। बड़े महाराज्य साहेब बराबर दास कुं पत्र लिखी करि भेजीते थे और हजूर साहेब जी वि ईस दास में वाकवदार हैं। दास हजूर साहेब का चरण कवल का रज है और सदा आज्ञाकारी है ऐसे दास कुं एक बार वि भूलि जाना दास का कमनसीवी है। अब इस दास के पत्र का जबाब हजूर···रा पर कृपा करि कें जलदी लिखियेगा जी। नीचे जो बात लिखा है उसको हजूर साहेब जी जरूर पढ़ कर कृपा पत्र दास कुं दीजियेगा। रजीसटरी में ठिकाना बांसतल्ला गल्ली चिठी का मासूल वा रजीसटरी का खरचे का टिकट २ ः।।) भेजते हैं सो जानीयेगा जी····

संवत् १९२० साल के फागुन महीने में जैमदावाद का सेठ ऊमा भाई सेठानी हरकुंवर बाई श्री समेत सिखर जी का जात्रा जो करने कों आये थे ओर इन लोगु ने श्री समेत सिख (र) जी का पाहड़ ऊपर तलहटिका मंदिर जी में रुपैया ८४१) का माल तोड़ा सूने का और कटोरी वा कलस चांदी का वा चंदवा पूठिया कारचोपि काम का चढ़ाया था सो ये सभ माल जबरदसति सैं आपनै लोगु के पुजेरी का हाथ से छीन कर पालगंज वाले का दिवान ले गया किसु का बात सुना नहिं। येह बात मक्षुदाबाद का पंच लोगु ने सुना सो येक चीठि मक्षुदाबाद के पंच लोगु के तरफ सुं ओर येक चिठी कलकत्ता का पंच लोगु के तरफ सुं पंचायति के दसखत से पालगंज का जमिदार कुं लिखि करि भेजूवाया था लेकिन पालगंज का जमिदार ने पंचों का चिठी कुं कछु खयाल नहि कीया। फेरि भंडार के तरफ सुं पूरणचंद जी गोलेछा नैं पालगंज का जमिदार के ऊपर नालिस हजारिबाग में किया। ये नालिस रजू होने के बाद पालगंज वाला येक फोजदारी मधुवन जी का कोठि का गुमासता लोगु के साथि दायेर किया अवर उसि फोजदारी का मुकदमा मै मधुवन जी का कोठि का गुमासता के ऊपर जरिवाना भया। गुमासता ने मार वि खाया और जरीवाना वि दिया। इसका ततविर करने को पूरनचंद बाबू गये लेकिन कछु भया नहि। इसका सरम के मारे पूरनचंद बाबू

हजारीबाग से येक दफा गुम होय गये। किसी को मालूम नहि वे कहां पर गये। लोग कहन लगे कि वह संथारा पचक कर अपना देह त्यागी दीया और सागरचन्दजी गुरुजी मक्षुदाबाद वाले येह बात जाहर किया कि सदर घाटि के पासि पूरनचंद बाबू ने देह त्यागी दीया सो उनको रुपैया हम अपने पास सुं खरच करिकै दाग दीया। अैसा-अैसा झूठा बात सागरचन्दजी ने जाहिर किया। असल येह बात है जो पूरनचंद बाबू सरम के मारे श्री सिद्धाचलजी अकेले चले गये थे नरसीनाथा का परतिष्ठाजी उपर। उहां से पूरनचंद बाबू ने हम कुं चीठी लिखा कि तुम मदत करो तो हम आवै नहिं तो नहीं आवैं। हमारे पूरनचंद बाबू के मुलाकात श्री रतन विजय जी समेगी जी के सवुत से हुवा था जब पूरनचंद बाबू संग श्री सिद्धाचल जी का संवत् १९१९ में लेकर गये थे। उस बखत हमलोग कलकत्ता से कितणा आदमी श्री रतन विजै जी का दरशन करनै को गये थे रेल ऊपर सेवडी तांई। उस जग पूरनचंद बाबू से बडी माफकत होय गई थी और हमको पूरनचंद बाबू साथी श्री सिद्धाचल जी ले जाने को बहोत कहा लेकिन हमारा जाना बना नहिं। फेरि श्री रतनविजय जो महाराज्य हमको कसम दिलाय करि श्री सिखरजी ताइ साथि ले गये। ऊहाँ पर पौहुंचि करि हम देखा सो डोगंबरी बीसपंथी वालों ने रथ का फेरी देने के गल्ली दखल वरस वीस सें करि लीया हैं। अपना सितांबरी का कोई रथ निकलने नहीं पावता है सो वह गली कों दोय पहर के बीच में डीगंबरी लोगुं से खाली करवाया अवर बड़े धूम सैं पालकि पर महोछव निकलवाया। उहां पर पूरनचन्द बाबू के सामन श्री रतनविजय जी हमको कसम दिलवाया कि तुम अपाने कावु भर श्री समेतशिखर जी का तीर्थ का ततबीर करने में कसर नहिं करना, किसुतर पर ततवीर छोड़ना नहिं। इस कसम का बात पूरनचंद बाबू चिठी में हमको लिखा था। उस चीठी का जवाब हम लिखी भेज्या कि आप चले आइये हम सब ततवीज कर लेगे। जब ये चिठी हमारा पूरन्चंद बाबू ने पाया तब मक्षुदाबाद आये, हमारे साथि मुलाकात किया फेरि हम हजारीबाग गये। उहां जब गये तब कलकत्ते का छोटा लाट साहेब का सकटर का चिठी सिपारस लिखाकर आपाने साथ ले गये। वह चिठी हजारीबाग का साहब कुं दीया अवर साहेब से मुलाकात किया। उस साहेब का रुख खराब देखा। वो साहेब पालगंज वाला के साथि मिला हुआ था। फेरि हम फोजदारि का मुचलका रद्द करनै के वासते वा जरीवाना फेरि लेने के वासते दरखास दिया और उसपर बहोत सवाल जुवाब किया तब साहेब हुकम दिया कि जरिबाना का रुपैया सब फेरि दिया जाय और मुच-

रका रद्द किया जाय। ये हुकम अपील अदालत सुं हुवा। येह रुपैया फिरता लेने के बाद पालगंज वाले ने दिवानी का मुकदमा में जबाब दाखल किया उसमें पाजि ने यह बात लिखा कि हम जैनी है और हमारा वंश में पारसनाथ जी पैदा हुये हैं और हमको जैनी लोग अपाने ठाकोर से जादा मानते हैं और हमारा अंगुठा पूजी करि वा हमसे सुफल लेकर तब अपना ठाकोर का दरसन करते हैं। इस माफक बहोत-सा बात पालगंज वाले ने लिखा फेरि इस मुकदमै मैं हाकिम के सामने हमारा गवाही चार घंटे तक भया। उसमें हमने कहा कि पालगंज वाला जमीदार जाति का घटवार है और मांसाहारी है और इसकी जात के लोग हमारे मधुवनजी की कोठी में नौकर हैं सो जैन सितांबरी का जूता उठाते हैं जैन सितांबरी का हुकम माफक और पालगंज के जमीदार का परछाई पड़ने से हमलोगुं कुं पातक लगता है। ऐसा छोटा जात है कि जिसका हाथ का हमलोग पानी पीते नहिं। ऐसा-ऐसा बहोत बात कहा। हजारिबाग का साहेब पालगंज वाले का खातरदारी करिके ऐसा हुकम दिया कि मधुवनजी का मन्दिर का बिलकुल चढ़ावा जैन सितांबरी लोग लेंगे और पहाड़ का चड़ावा बिलकुल पालगंज वाला जमिदार लेगा ऐसा हुकम हजारिबाग में हुवा। तिसका नकल लेकर रांचि में अपील किया। उस अपील का साहेब ने हुकम दिया कि मधुवनजी की कोठी का वा मन्दिर का बीलकुल चड़ावा वा पहाड़ के ऊपर का मन्दिर का बीलकुल चढ़ावा जैन सितांबरी का है और जैन सितांबरी पावेगा ऐसा डीगरी जैन सितांबरी को अपील का साहेब ने दिया। तिस हुकम का नाराजी में पालगंज वाला कलकत्ते में खास अपील हाई कोरट में किया। हाई कोरट वाले ने अपील अदालत का डिगरी को कायम रखा। जैन सितांबरी की जीत हुई और पालगंज वाले सें रुपैया ८४१ और अदालत का दस्तूर माफक खरचा हमलोगु ने लिया। फेरि पालगंज वाला जमिदार ने रुपैया १२००० का दावि देकर हजारिबाग में फेरि नालिस किया कि पाहड़ हमारा वा पाहड़ पर का सब मन्दिर हमारा वा आभूषण हमारा वा चढ़ावा सभ हमारा। ऐसा नालिस पूरनचंद बाबू के ऊपर किया। हजारिबाग के साहेब ने पालगंज वाला जमिदार की मदत करि के पूरनचंद बाबू के ऊपर डिगरी किया। उसका नकल लेके उसका अपील हम कलकत्ता के हाई कोरट में किया। कलकत्ता के हाई कोरट के हाकिम लोगुन हजारिबाग का हाकिम का किया हुवा डीगरी को रद किया और पाहड़ पर का मन्दिर का बिलकुल चढ़ावा व मधुवनजी का मन्दिर का बिलकुल चढ़ावा लेनेका अकतीयार अवर दखल जैन सितांबरी को

दिया। इसके बीच में बराबर पालगंजवाला जमिदार के साथ और जैन सितांबरी के साथ फोजदारी होता रहा और डीगंबरी तेरेपंथी वा बीसपंथी सब लोग पालगंज वाला जमीदार के मदत पर रहे। लक्ष्मीचंद सेठ मथुरा वाला वा सहारनपुर वाले डीगंबरी बड़े-बड़े आदमी पालगंज वाले जमिदार की तरफ गवाई दिया कि पाहड़ ऊपर का बिलकुल चढ़ावा वा मधुवन जी का बिलकुल चढ़ावा पालगंज वाला जमिदार लेता है। जैन सितांबरी वा पूरनचंद कवी कोई चढ़ावा पाया नहीं। ऐसी गवाई झुठी डीगांबरी लोग दिया लेकिन इस गवाई से कछु हुवा नहीं। एक बात में उड़ाय दिया हमारा जैन सितांबरी के मजहबसे डीगांबरी लोग बाहर हैं। इस वासते इन लोगु का गवाही इतवार नहीं। इस बात पर हाकम को खूब इतवार हुवा और हाई कोरट के हाकम जैन सितांवरी को डीगरी दिया। तिस बाद पाहड़ के ऊपर का बीलकुल चढ़ावा और मधुवनजी का मन्दिर का बीलकुल चढ़ावा सभ जैन सितांबरी का भंडार में जमा होता था और पहाड़ पर जो बड़ा मन्दिर जी है उसमें सब सितांबरी प्रतिमाजी है…और इंगरेज लोग सरकार की तरफ से बहोत आदमी पाहड़ पर रहता था और बड़े-बड़े अंगरेज लोग सरकार की तरफ से पाहड़ पर जाते थे हवा खाणे को और उस जगे रहते थे और उस पहाड़ पर सरकार बहादुर की तरफ से गोरा लोग और अंगरेज लोग के खाने के वास्ते भैंसा और बकरा-बकरी गऊ हजारों जाती थी। ऐसा अनीत का काम आपने तीर्थ अस्थान में होता था। इसके वासते पच्छिम से अकबर शाह बादस्याह का दिया हुआ फरमान श्री हीरविजय सूर जी के नाम का मंगवाय के बड़े लाट साहेब के पास दरखास के साथि दाखल किया और दरखास में बहोत सकत बात लिखा। बड़े लाट साहेब ने फौज के मालिक कर्वाडीन चीफ से सला करिके श्री समेतसिखरजी के पाहड़ पर से बिलकुल गोरा और अंगरेज लोगुं कुं उतारि लीया और हमारा नाम का चिठी लिखा कि पारसनाथ पाहड़ में और गोरा लोग कभी नहिं जायगा। और मधुवन जी का कोठी के पश्चिम फाटक पर भोमिया जी का मन्दिर जी है। उहाँ पर येक बगीचा लगाया था और उसमें पाँच जगे भैंरूजी का मन्दिर अस्थापित किया था। इस माफक सभ दुरस्त और ततवीज करि दिया था। डीगंबरी लोग सफल बुलाने जाते थे। सितांबरी लोगु के सफल बुलाने का कहु इलाका था नहीं और कोई जाता था नहीं। पूरनचंद बाबू ने इस काम के पीछे अपना जान दे दिया। छः महीना तक उड़द के वाकला खाय करि बराबर मौन करिके रहे श्री सिखरजी का काम के वासते। ऐसा

सतपुरुष हुणा मुसकल है। हम संवत् १६२६ साल का कातिग महीना में दीली गये थे परतापचंद जवेरी का बेटा की सादी में और पूरनचंद बाबू उस बखत बहोत बेमार थे। पीछे से पालगंज वाले जमिदार ने मधुवनजी का कोठि का बहार भोमियाजी का मन्दिर है उहाँ बगीचा था सो सब लुटाय दिया और उसमें खपरे का मकान था सो सब तोर डाला और दुष्ट ने भैरूंजी का सभ मन्दिर पका को तुड़वाय डाला और भैरूंजी की पींडी कुं खंड-खंड करि दिया, बड़ा खराब काम किया। तब मधुवनजी का कोठी का गुमाश्ता रघुनाथ पांडे ने पालगंज वाला जमिदार के नाम फोजदारी में नालिश किया। फेरि फोजदारी के साहेब ने पालगंज वाले जमिदार की मदत करिके फोजदारी के मुकदमा कुं ढीस मीस करि के रघुनाथ पांडे गुमासता मधुवन की कोठी को हाजर रहने का हुकम दिया और पालगंजवाले जमिदार को फोजदारी का साहेब कहकरी झूठा हलफ का नालसि रघुनाथ पांडे के ऊपर कराया और इस मुकदमे को फोजदारी वाला साहेब करि के रघुनाथ पांडे कुं अदालत में हाजर रहने का हुकम दिया। गुमासता को फोजदारी वाला साहेब ने अटकाया और हम दीली चले गये। पूरनचंद बाबू जादे बेमार होय गये। येहसा हवाल पालगंज वाला देखिकरि फोजदारी वाला साहेब के मदत से पाहड़ पर जो जैन सितांबरी का पुजेरी वा नोकर वा सिपाई जो कहु रहता था सो सभ कुं मार पीट के निकालि दिया और पाहड़ के ऊपर तलहटी के मन्दिर में पालगंज वाला जमिदार अपाना ताला बंध करि दिया और पुजेरी नोकर चाकर सभ आपना रखि दिया और पाहड़ का मन्दिर की बीलकुल चढ़ावा लेने लगा। इसके बीच में पूरनचंद बाबू संवत् १६२९ साल का अगहन बदी १४ कुं देवलोक होय गए। पीछे हमारे पासि दीली जमादार गया तब हम दीली से आय करि मक्षुदाबाद मै गए। उहाँ पर पूरनचंद बाबू के काम पर हरखचंदजी गोलेछा कुं कायम कीया और हम कलकत्ते आय करि फेरि मधुवनजी गये। उहाँ पर जाय करि पाहड़ का चढ़ावा के वासते पालगंज का जमिदार के साथि फोजदारी कीया। उस वखत बहोत हाकेम लोग अकठे हुये और ये हुकम दिया के चढ़ावा पाहड़ का सब मन्दिर जी का फोजदारी अदालत में जमा होगा। पीछे जिसका हक होगा उसकुं मिली जायेगा। ईसके बीच में हमारि पासि रघुनाथ पांडे गुमासता ने येक सिपाई भेजा कि तुम तुरंत हमारे पासि चले आवो। हमको फोजदारी के साहेब ने झूठा हलफ के मुकदमे में दौरा सुपरत किया। हमारा जान नहिं बचेगा। अेसा खबर पाइ करि हम रघुनाथ पांडे के पासि गये। जायेकर

फोजदारी के साहेब के पास जामिन दाखिल किया कि दौरा के मुकदमा मैं रघुनाथ पांडे कुं हाजर करि देंगे। पीछे रघुनाथ पांडे और हम दोनुं आदमी दोरा के साहेब के कचेरी में गये और बराबर हाजर रहैं। दोरे का साहेब बि पालगंज वाला जमिदार की मदत पर था ईस वासते दोरे का मुकदमा करिकें बिना कसूर रघुनाथ पांडे कुं गुनगार करिके दोरे के साहेब ने दोय बरस का म्याद रघुनाथ पांडे कुं दीया। दोरे के साहेब से हमसैं बहोत तकरार हुवा। साहेब का कछु बस चला नहिं नहिं तो हमारे कुं वि केद देता। फेरि हम रघुनाथ पांडे के वासते जेलखाना का साहेब के पासि गये और उसकुं रुपैया देकरि पांडे जी के वासते एक नोकर रखि दिया और खाने-पीने का असबाब बि बहोतसा रख दिया और जेल वाले साहेब ने हम से कहा कि रघुनाथ पांडे का कबि जात नहीं जायेगा और जब तक हम जीते हैं तब तक रघुनाथ पांडे के सामने कोई देखि वि नहिं सकेगा। रघुनाथ पांडे के पासि जेलखाने में रजीसटरी चीठो बराबर आती जाती थी। येह सब काम का बनोवसत करिके हम हजारीबाग से कलकत्ते आये। आय करि रघुनाथ पांडे कुं छुडाने के वासते कलकत्ता हाई कोरट में अपील कीया। अपील का मुकदमा सताईस मैं दिन पेश हुआ, उसी रोज कलकत्ता के हाई कोरट के हाकिम लोग हुकम किया के रघुनाथ पांडे केद से खलास होय। ये हुकम होने से उसी वखत हाई कोरट से तार में खबर गया हजारिबाग के साहेब को कि तुरत रघुनाथ पांडे कुं केद से छोड़ दो। इस माफक हुकम हजारिबाग के साहेब ने पाय करि रघुनाथ पांडे कुं तुरत केद से छोड़ि दिया। इसके बीच में धनपतसिंह दूगड़ परतापसिंहजी दूगड़ का बेटा श्री समेतशिखर जी जात्रा करणे कुं गया सो पाहड़ पर चढ़ावा के वासते पालगंज वाला जमिदार के नौकर से तकरार हुवा। नोकर ने आपना सिर फोड़ डाला फेरि पाहड़ पर थाने कि मदत जाय कर उस नोकर कुं वो धनपत सिंह कों गीरफदार करिके मधुवन जी में ले आया। मधुवन में मेला पर फोजदारी का साहेब तदारक करन को आया था सो वहाँ मौजूद था। उस साहेब के पास थाने वाले लोग धनपत सिंह को ले गये। साहेब ने थाने वाले की जुबानी सुनकर पालगंज वाला जमिदार की मदत करि के धनपत सिंह को गाली दिया और कहा कि तुम कुं हम संगीन म्याद देंगे। ऐसा हावाल फोजदारी के साहेब का देखिकरि धनपत सिंह घबराय के रुपैया दोय हजार खरच किया। पीछे फोजदारी के साहेब ने धनपत सिंह के मुकदमा का विचार किया। उस विचार में धनपत सिंह के ऊपर रुपैया च्यार सौ जरीवाना किया और धनपत सिंह का नौकर ऊपर सौ रुपैया

जरीवाना किया और येक महीना धनपत सिंह को फौजदारी के साहेब ने अटका रखा और धनपत सिंह की बहोत खराबी किया। इस मुकदमा में धनपत सिंह का हजारों रुपैया खरच वी होय गया और बेइजत वी हुये और जरीवाना भी दिया। ऐसा खराबी पालगंज के जमिदार ने धनपत सिंह का कराया तिसके बाद धनपत सिंह हमको चिठी लिखा कि जिसमें जरीवाना फेरि करि मिलैं सो उपाय करना चाहिजे। हमको पालगंज वाले ने बहोत बेइजत किया है। इस माफक हम चिठी पाय करि धनपत सिंह को चिठी लिखा कि तुम अपान येक गुमासता हुसीयार हमारे पास भेजि दो। ऐसा चिठी धनपतसिंह पाय कर येक हुसीयार गुमासता हमारे पास भेजि दिया। हम उस गुमासते को खुब तालेम करि के और कागद पत्र सब देकरि राचि में अपील करणें को भेजा। वे गुमासता वहाँ जाय करि राचि का साहेब के पासि अपील किया। अपील के साहेब ने मुकदमै का विचार किया, करिके हुकम दिया कि पांच सौ रुपैया जरीवाना हुवा है उसमें से एक सौ रुपैया फेरि दिया जाय, ऐसा अपील के साहेब ने हुकम दिया। उस हुकम की नकल ले करि धनपत सिंह का गुमासता कलकत्ते हमारे पासि आया। हम वे कागद कलकत्ता में कौंसली लोगु कुं दिखलाय करि कलकत्ता की हाई कोरट में अपील किया। वह मुकदमा पेश हुवा और कलकत्ता के हाई कोरट का जज लोग बीलकुल पांच सौ रुपैया जरीवाना का फेरि करि दीणे का हुकम दिया। वे रुपैया अदालत सैं धनपत सिंह को मिला और धनपत सिंह का मुकासांई दूर गया। ऐसा हाल धनपत सिंह का हुवा। श्री समेतशिखरजी महाराज के पाहड़ पर धनपत सिंह दूगड़ ने च्यार टुंक नया बनाया है। येक टोंक में श्री अष्टापद जी का भाव बनाया है, दूसरा टोंक में श्री चंपापुरी जी का भाव बनाया है तीसरे टोंक में श्री पावापुरी जी का भाव बनाया है, चौथे टोंक में श्री गिरनार जी का भाव बनाया है। इस प्रकार चार टोंक का असथापन धनपत सिंह दूगड़ ने नया सागरचन्दजी गुरु जी के मारफत कराया है सो ये सब बात अजोग हुआ है। ऐसा बात तीरथ प्रगट हुये बाद कवी हुवा नहीं। इस तीरथ पर बड़े-बड़े आचारज जी महाराज आये लेकिन ऐसा हुकम किसी ने नहीं दिया और जब तीरथ प्रगट हुवा था तिसके बाद सुकालचन्द जी बिरानी ने सं० १८२५ साल में जीरनोद्धार कराया था उस वखत बड़े-बड़े आचारज महाराज इस तीर्थ पर आये थे और बड़े-बड़े सेठ सेनापति आये थे लेकिन किसु ने ऐसा नया टोंक बनाने का आदेश नहीं किया। इस वखत सागरचन्दजी गुरु जी जिस माफक पंडिताई का जोर करते हैं वह बात चिठी में लिख

सकते नहीं। धनपत सिंह ने शास्त्र के बाहर का काम किया है। जैसा गरव धनपत सिंह कौं धन का भया है वैसा दूसरे कुं नहीं हैं। और लक्ष्मीपति धनपत सिंह का बड़ा भाई है वह समझता है कि हम दूसरे जगत सेठ पैदा भये हैं लेकिन बिरादरी वाले इन लोगु कुं कछु समझते हैं नहीं। ये दोनुं भाई जो काम करते हैं सो अनीत का करते हैं, किसी कुं कछु समझते नहीं असा धन जोर हुआ है। आगे परवत का सब मन्दिर जी का विलकुल चढ़ावा जो फोजदारी अदालत में जवत था उसका मुकदमा फोजदारी का साहेब वरस डेढ़ तांइ रोकि कर रखा। जब मुकदमा पेस होया तब साहेब गोलमाल करिकें रोकी दिया। साहेब को पालगंज वाले जमिदार की तरफदारी थी और हमलोगु कों साहेब यह बात कहा कि तुम और पालगंज वाला सलुक करि ल्यो। ऐसा हवाल फौजदारी के साहेब का देखि करि हम कलकत्ते मे छोटे लाट साहेब के पास हाई कोरट के वकील के मारफत बड़ा सकति दरखास्त दाखिल किया और उस दरखासत के साथ बहोत सा अदालत का कागद दाखल किया। तिसके बाद हम ओर वकील लाट साहेब के पास गये और मु जवानी जितना हवाल कह सकता था सो सब कहा और जो जो कागद दिखलाना था सो सब दिखलाये और चले आये। पीछे दिन १५ के बाद छोटे लाट साहब ने फोजदारी के साहब का नाव हुकम जारी किया कि जैन सितांबरी मजहब का मुकदमा तुम डेढ़ वरस से किस वास्ते रोकि कर रखा है, इसका खुलासा हवाल तुरत लिखी करि हमारे पासि भेजो। असा चिठी गौरमींट का फोज-दारी का साहेब पाय करि उसि रोज मुकदमा फैसला किया। इसमें हुकम लिखा कि पाहड़ का वा मन्दिर का वीलकुल चढ़ावा सब जैन सितांबरी पावेगा इसमें कोई सकस वो पालगंज का जमिदार तकरार करेगा तो संगीन सजा पावेगा और जवती का चढ़ावा जो हमारे अदालत में है सो सब जैन सितांबरी को दिया जाय। ऐसा हुकम होने के वाद दूसरे दिन जवती का चढ़ावा फोजदारी अदालत में अनदाज दोय हजार के ऊपर फेरि करि ले लिया। जैन सितांबरी का जीत हुआ ऐसा हुकम होने के बाद पाहड़ का वीलकुल चढ़ावा जैन सितांबरी का आदमी लेता था। पालगंज का कोई आदमी चढ़ावा को छूता नहीं था और मधुवनजी का कोठी का वा भंडार का वा मन्दिर सभीका चढ़ावा जैन सितांबरी के भंडार में जमा होता था। येह ऐसा काम हुवा था कि दस पनरा वरस में लाख दोय लाख का भंडार श्री सिखर जी का होय जाता ऐसा काम हम करि के उहाँ का निगैवानी और तदारक करना छोड़ दिया। तिसके बाद पालगंज का जमिदार मक्षुदाबाद

गया। वहाँ पर महीना तीन रहा और लक्ष्मीपत ओ धनपत सिंह दूगड़ ने उसकी मदत किया और धनपत सिंह अपाने निज से पालगंज वाले जमीदार को खाने का खरचा और नोकर-चाकर का खरचा दिया वो पालगंज वाले जमीदार को धनपत सिंह अपाने मकान में रखा और पालगंज वाले जमीदार की जमीदारी रुपैया सतरा हजार में धनपत सिंह दुगड़ ने बन्धक रखा और लक्ष्मीपत धनपत सिंह वा मूलचंद हरखचंद दुधोड़िया और मेघराज कोठारी वा हुलासच्चंद सेठिया वा हुलासचंद संगी वगैर लोगु नै हरखचन्द गोलेचा को समझाय करि पालीगंज वाले जमिदार को येक लिखापढ़ी जैन सितांबरी की तरफ से हरखच्चंद गोलेचा के दसखत से करवाय दीया और उस लीखापढ़ी कुं रजीसटरी करवाय दिया और उस लीखापढ़ी में येह बात लिखा कि पाहड़ का ऊपर का सभ मन्दिर का तीन वरस तांई का जैन सितांबरी के कोठी में जमा होगा और उस चढ़ावो उठाणै के वासते पाहड़ के ऊपर जैन सितांबरी का आदमी और पालगंज वाले जमीदार का आदमि दोनु जायगे और दोय तरफ की बही में चढ़ावा जमा होगा। बाद तीन वरस के सब चढ़ावा येकठ्ठा करके उसका तीन भाग करि के जो येक भाग का जीतना रुपैया होगा सो उस रुपैया के परमाण के माफक वरस वरस पालगंज के जमिदार को दोने का लीखापढ़ी जैन सितांबरी कर देगा। उसी लीखापढ़ी के माफक वरस वरस रुपैया पालगंज वाले जमिदार को जैन सितांबरी देगा। जिस वरस लीखापढ़ी के माफक रुपैया पालगंज के जमिदार को जैन सितांबरी नहिं देगा उस वरस पालगंज का जमिदार जैन सितांबरी पर नालिस करि कें डिगरी कराय के पाहड़ का चढ़ावा बिलकुल जबत करि लेगा और तीन वरस के बाद दूसरा लीखापढ़ी जैन सितांबरी पालगंज का जमिदार को नहीं करि देगा तो पालगंज का जमिदार जैन सितांबरी पर नालिस करि कै जबरदसती से करवाय लेगा। ऐसा अखतीयार पालगंज के जमिदार को देकर जैन सितांबरी की तरफ से फकत येक हरखच्चंद गोलेचा के दसकत से लीखापढ़ी कर दीया है और उस लीखापढ़ी में यह वी लिख दिया है कि तीन वरस का जो चढ़ावा जैन सितांबरी का कोठी में जमा होता है सो बाद तीन वरस के बोलकुल चढ़ावा जेन सितांबरी पालगंज के जमिदार को फेर के दे देगा। इसमें उजर करेगा तो पालगंज वाला जमिदार जैन सितांबरी पर नालिस करि के लेगा, ऐसा मजबूत लीखापढ़ी पालगंज के जमिदार को जैन सितांबरी की तरफ से हरखचंद गोलेचा का दसकत से लिखा गया। हरखचंद गोलेचा जैन सितांबरी की तरफ से श्री सिखरजी की भंडार का काम करता है इसी वासते हरखचंद

गोलेचा का येक दसखत से कागद सही हुवा और जितना आदमी मिलकर ये लीखापढ़ी पालगंज के जमिदार को करवाय दीया है उन लोगुं का किसी का दसखत लिखापढ़ी में नहीं है। बालोचर वाले वी लीखा पढ़ी में सामिल नहीं है। फकत अजीमगंज के कितनेक आदमी जिन सौभाग्यसूरिजी के आज्ञाकारी इस लीखापढ़ी मे सामेल हैं। स्वामीनाथ, इन लोगुं पर कां अैसी भीड़ पड़ी थी जो ऐसा लीखापढ़ी करि दीया। नो वरस ताइ मामला चला। इसमें हजारों रुपैया खरच भया। उस वखत अजीमगंज वाले ने येक पईसा वी दिया नहीं। इस वखत तैयार काम को इस लोगुं ने हमसे अखेज करिके बरबाद करि दिया। लिखाते हुये मेरे आंखु से पानी गिरता है। नो दस वरस तक हम इस मुकदमा के लड़ाई के पीछे रुजगार हाल सब बरबाद करि दीया और मुकदमा लड़ि करि अैसा अचल काम किया था कि किसी का उठाया उठ नहीं सकता था सो दुष्ट लोगु ने बिलकुल बरबाद करि दिया। इस काम के पीछे पूरनचंद बाबू तन, मन और धन तीनु लगाय दिया। ऐसे सतपुरुष का नींब कुं जिसने उखाड़ा है उसका कबि भला नहीं होगा। इन लोगु ने येह समझा कि पूरनचंद बाबू मर गये अब कोई रुपैया खरचन वाला है नहिं, जो हमलोग करेंगे सोई होगा। मक्षुदाबाद अजीमगंज में वीजय गच्छ के श्रीपूज्य जी शांतिसागरसूरिजी हैं सो हरखचंद जी गोलेचा वा धनपतसिंह जी दूगड़ के अकतयार में हैं। पालगंज वाले को जो जैन सितांबरी के तरफ से लीखापढ़ी करि दिया है उसका सही महोर का नकल रजिसटरी का अदालत सें रुपैया खरच कें हमने मगवाय लिया है उससे सब खुलासा हवाल मालूम भया है। यह जैन सितांबरी के तरफ से दस-बीस आदमी मनसुबा करके ये हरखचंद गोलेचा का दसखत सैं लीखापढ़ी करि दिया पालगंज के जमिदार को सो बहोत खराब किया। इतना दिन कोई मरद नहीं बना जब सब काम सीजल होय गया तब लुटाणे को सब कोई तैयार होय गए। जैन सितांबरी सोसायटी में करोडुं आदमी है और करोडुं आदमी की तरफ से येक आदमी लीखापढ़ी करि दे तो कछु सनंद नहिं होने सकता है। इस लिखापढ़ी को तो हम मोरी में भसाय सकते हैं। जैन सीतांबरी सोसायटी का धन लुटाय देना का अखतियार येक आदमी का नहिं होने सकता है। हरखचंद गोलेचा जैन सितांबरी सोसायटी का मनेजर है याने काम चलाने वाला और हम अनररी येजंट हैं। बिना हमारे दसखत वा गवाही के कोई सनद वाली लीखापढ़ी चल नहीं सकता लेकिन इस वखत हमारे पास रुपैया नहिं है जो इन लोगु का सामना करें। इस लीखापढ़ी कै रद करणें में तीन जगा मुकदमा लड़ना

पड़ेगा इसमें रुपैया पांच हजार का अन्दाज का खरच का सामना मालूम पड़ता है। हमारे पास इतना रुपैया खरच का सुभीसता है नहीं और कोई इस वखत नजर आवता नहीं के जिसके पास अरज करे। इस वखत जिन शासन में हजूर साहेब जी सूरज के सामान हैं इस वासते चिठी की लिखावट किया है कि यह चिठी वांचि करि हजूर साहेब जी अगहन में होय चाहे माघ में होय येक दफे जरूर श्री सिखर जी पधारियेगा जी चाहे संघ लेकरि पधारियेगा जी अगर संघ का सुभीसता नहीं लगे तो छड़ी असवारी से पधारियेगा जी और इस दास के पेली खबर दीजियेगा जी सो दास हजूर साहेब जी के चरण कमल में श्री सिखर जी पौंचेगा। तब हजूर साहेब जी सब हवाल सुनकर वाकब होयगे जी व नजर सैं सब देखि लेंगे जी श्री सिखर जी का बाबत का कुल कागज पतर फरमान इत्यादि सभ हमारे पास है किसु से मांगने का कछु दरकार है नहीं। अनदाज पांच-सात पसेरी कागज होगा, अदालत का फेसला, डिगरी वा लाट साहेब का दिया हुवा हुकम सब कागज हमारे पास है और इस वखत जिन शासन में हजूर के माफक कोई आचारज नहीं है। इस वास्ते मैं अरज करता हूँ के हजूर मेरे लिखणे पर खूब खयाल करेंगे। अगर मेरे लिखणे पर हजूर खयाल नहीं करेंगे तो श्री समेद सिखर जी का तीरथ गौरमींट का जुमा में करि दूंगा लेकिन पाहड़ का चढ़ावा पालगंज वाले जमिदार को लेने वा खाने नहीं देऊँगा। जिन शासन के धन को येक आदमी लुटाय देने से लुट नहीं सकता। जिन शासन में फायदा करने के वासते चाहे सो मालेक बनकर फायदा या नफा कर सकता है मुदा जिन शासन का धन को येक आदमी लुटाय देने से लुट नहीं सकता। हरखचंद गोलेचा जिन सौभाग्यसूरिजी का आज्ञाकारी है इसके लुटाने से करोडुं आदमी जैन सितांबरी का धन नहीं लुटि सकता। जैन सितांबरी के बीलकुल लोग सब मुलक के एकट्ठा होय कर श्री संग समेत कुमेटी करिके येक सला से लुटावे तो लुट सकता है। नो दस बरस हम मुकदमा लड़ि कर जैसा-जैसा कागज वा फैसला वा दलील पैदा किया है सो सब पानी में नहीं बह जाने सकता है। हम लाट साहेब के पास इस माफक दरखास देने के वासते मसोदा करके रखा है जिन सितांबरी सोसायटी में करोडुं आदमी है इन लोगु का कुमेटी हुवा नहीं वा इन लोगु का दसखत हुवा नहीं वा इन लोगु का कुमेटी में हरखचंद गुलेचा कु अखतीयार दिया नहीं और इन लोगु के जैन सितांबरी मजहब का धन येक हरखचंद गोलेचा के दसखत से पालगंज वाला जमीदार किस तर से लीन सकता है। इस वासते ये तीरथ का चढ़ावा और असबाब सब गौरमींट

अपाने जुमे और हिफाजीत में रखे। जब जैन सीतांबरी सोसायटी येकहटा होय कर कुमेटी करके जिसकुं मालेक करके कुमेटी का दसखत सहित हुकमनामा दीगे उसकुं गौरमींट बिलकुल जैन सितांबरी सोसायटी का धन समझाय देगा। जब तक ऐसा काम नहीं होगा तब तक गौरमींट आपने जुमा में रखेगा और तीरथ की तदारक करेगा और पाहड़ का चढ़ावा आपणे जुमे रखेगा। स्वामीनाथ ! ऐसा विचार किया लेकिन ईभी दरखास दिया नहीं, हजूर के पास अरजी किया है। जब तक हजूर साहेब जी कोई हुकम लिखि करि नहीं भेजेंगे तब तक गौरमींट में दरखास देना हम बन्द रखेंगे। गौरमींट में दरखास देने से उसी वखत गौरमींट वाला तीरथ और तीरथ का धन को आपने जुमे कर लेगा। एह होने से तीरथ में बड़ी अनीत होयगी। हजूर साहेब ऐसे आचारज सूरज के समान उद्योत करन वाले रहते ऐसा काम बहोत बेजाय होगा वा तीरथ की बड़ी हीनता होयगी। पालगंज वाला जमिदार को परवत ऊपर के चढ़ावा का धन खाने दीगे नहीं। जिस दुख से इस तीरथ का चढ़ावा का पका डिगरी लिया है वह दुख मैं ही जानता हूँ और पूरनचंद बाबू ने इस तीरथ के वासते जान तक दे दिया। अब पूरनचंद बाबू मर गये तब लोगु ने जैसा काम किया इस वासते दास विनती लिखा है। हजूर साहेब जी, तजवीज करिके जवाब लिखियेगा। हमारे पास रुपैया खरचे का सुभीता होता तो आज तक उस लीखापढ़ी को रद करवाय देते। स्वामीनाथ ! सिखर जी का मामला चलता था उस वखत येक आदमी में हमारा रुपैया वाकि था जिसपर हमने नालिस किया था लेकिन उसकी ततवीर हमसे वन पड़ी नहीं। हम बराबर बाहर रहे। पीछे से मुकदमा रजु होय के हाकिम ने खराब करि दिया। उसमें हमारे कुं च्यार हजार रुपैये का पेच पड़ा। हमने तो आपाने भर मगदूर जैसा काम सिखर जी के वासते किया है सो ज्ञानी महाराज्य जानते हैं। बड़ी-बड़ी फोजदारी भई और बड़े-बड़े हाकिम लोगु के अपसर लोगु को हमने पिटवाय दिया लेकिन आज तांई येक पईसा जरी-वाना दिया नहीं, मुचलका वि दिया नहीं। गुरुनाथ के चरण के कृपा से इस वकत तक तो बेदाग बचे हैं। पूरनचंद बाबू के मरने के बाद मक्षुदाबाद के लोग वा इनके घर के गुमासता लोग पूरनचंद बाबू का पौसी पुतर जो अब ढुंढीया होय गया है उसका नाम प्रसन्नचंद है उसकुं चढाय कर हमारे ऊपर मकसुदाबाद की अदालत में सात हजार दोय सौ रुपैया की नालिस करवाया और उसमें पूरनचंद बाबू के वखत के चार पाँच गुमासते झूठा हलफ लेकर गवाई दिया कि खाजूराम पूरनचंद बाबू से रुपैया करज लिया है। ऐसा गवाई

हुणे से मक्षुदाबाद का हाकम लोगु ने हमारे ऊपर डिगरी किया। उसकी नकल हम लेकर कलकत्ते की हाईकोरट में अपील किया है उसका लंबर ११७ है। और उस मुकदमा के खरचा तीन च्यार हजार रुपैया हमारा पड़ी चुका हैं। माघ महीने तांइ मुकदमा पेश होयकर हुकम होयेगा और येक नालिस परसनचंद गोलेचा ने कलकत्ता की छोटी अदालत में हमारे ऊपर रुपैया ७२७।) के किया व मुकदमा वरस दोय तांई चला। तीन दफा येकही मुकदमा चला करि छोटी अदालत से हाई कोरट में गया, हाईकोरट से फिर छोटी अदालत आया सब जगे दास की जीत हुई। इस मुकदमा में दोय हजार रुपैया के ऊपर हमारा खरच हुआ। स्वामीनाथ! हमको इसतर झूठा मुकदमा में लोगु ने फसाय करि श्री सिखरजी के तीरथ को बरबाद किया। अब हजूर मालक हैं। जैसा तजबीज में आवे सो हजूर कीजियेगा। पूरनचंद बाबू का पौसीपुतर प्रसन्नचंद ढुंढीया है उनके जीते जब उसने गोदी लिया था उस वखत तो सितांबरी धरम में था उनके मरने के बाद ढुंढीया होय गया। उसके पास श्री सिखर जी के भंडार का तीस चालीस हजार रुपैया का चांदी, सोना, हीरा, पन्ना ओगेरे का चीज है सो चीज मिलना मुसकल मालूम होता है और हरखचंद गोलेचा के पास भी श्री सिखर जी के भंडार का नगदी वा जेवर सुधा बीस-पच्चीस हजार का माल है। सं० १६२७ साल में अहमदाबाद का करमचंद प्रेमचंद संघ लेकर श्री सिखरजी आया था सो वह रुपैया १००००) दस हजार के अन्दाज दे गया था सो सब रुपैया हम हरखचंद जी गोलेचा की कोठी में जमा कराय दिया था। इसी अदालत से परसनचंद वा उसका मदतगार लोग वा उसके सलागीर लोगु ने हमारे ऊपर दो नालिस झूठा करवाया। मुझकुं येक भरोसा हजूर साहेब का चरण कमल का है सो तकलीफ देता हूँ। मेरे इज्जत की तरफ जरूर हजूर देखना। अगर कोई ततवीर मुझसे नहीं बनेगा और पालगंज वाला जमिदार श्री समेत सिखर जी का आमदनी का वरस वरस रुपैया लेगा तो मैं अपना जान दे देऊँगा इस बात को हजूर झूठा नही समझियेगा, जिसमें जिन शासन का तीरथ नहीं बिगड़े सो हजूर कीजियेगा। इस तीरथ में बहोत मेहनत किया है सो लोगु ने राग द्वेष से सब खोय दिया। हजूर की नेक नजर होयगी तो सब काम ठीक होय जायेगा। स्वामीनाथ! मक्षुदाबाद में बहोत बड़े-बड़े आदमी हैं लेकिन सब गधे हैं। येक सो वरस हुवा इस समेत सिखर जी का जीर्णोद्धार हुये को इसकें बीच में जैन सितांबरी में बड़े-बड़े सेठ सेनापति होय गये लेकिन किसु ने पालगंज के जमिदार को चढ़ावे की सनद लिखकर दिया नहीं। अगर मक्षुदाबाद वाले लोगु को पालगंज वाले

जमिदार की खातर मंजूर थी तो सब मिलि करि दस पंदरे हजार रुपैया देकर पाहड़ की तरफ की फारकति लिखवाय लेते और मधुवन गांव को मोल खरीद लेते। सो नहिं करिके चढ़ावा की लीखापढ़ी करि दिया। स्वामीनाथ ! हमारी लिखावट को जरूर ततवीज कीजियेगा और हजूर साहेब के करने से सब कुछ होने सकता है। पालगंज वाला जमिदार परवत पर का चढ़ावा लीखापढ़ी के माफक नहिं लेने सके सो ततवीज और उपाय हजूर साहेब जी करना। मैं बहोत लाचार होय कर हजूर साहेब जी को लिखता हूँ। मेरे गरीब का विनती को हजूर जरूर सुनना जी। मेरी बात और इजत हजूर साहेब जी के हाथ है। हजूर साहेब जी दिल मैं रखेंगे तो सब होने सकेगा। इस बखत हजूर साहेब जिन शासन में श्री विष्णुकुमारजी महाराज्य के तर पर उद्योत करने वाले हैं। दास की अरजी के कुल पत्र पढ़कर जवाब जरूर लिखियेगा मैं बहोत मिहनत से विनती पत्र हजूर के चरण कमल में भेज्या है। श्री श्री। और गरोमींट के अखतयार मैं जब सिखर जी का तीरथ जायगा तब परवत पर का चढ़ावा बिलकुल गौरमींट लेगा जैन सिवांबरी की तरफ से और पालगंज वाले को परवत पर का चढ़ावा का येक दाना चावल छूने देगा नहीं किस वासते कि बिलकुल कागज हमारे पास है सो सब हम गौरमींट को दे देंगे तब उस कागज के जोर से गौरमींट चढ़ावा सब लेगा। हरखचंद की लीखा-पढ़ी सब रद होय जायगी लेकिन यह काम अबि हम करेंगे नहीं। जब हजूर की तरफ से जवाब आय जायगा तब करेंगे। हजूर साहेब को वीलकुल पत्र पढ़ते बहोत तकलीफ होयगा लेकिन क्या करूँ, जिन शासन का काम है इस वासते हजूर साहेब को तकलीफ दिया है। कसूर और अपराध दास का हजूर माफ कीजियेगा जी और विनती का कृपा पत्र दीजियेगा जी। जादे शुभ सं० १६३० मी० कातीक बदी ६।

अर्द्ध कथानक

बनारसी दास

[पूर्वानुवृत्ति]

शराफ का भाई सीधा कोतवाल के पास जा रहा है कहकर वहाँ से निकल गया। किन्तु, पहले वह अपने घर गया। वहाँ से अच्छे रुपयों के बदले खोटे रुपये लेकर उन्हें पतले कपड़े की थैली में भरकर गाँठ लगायी और कोतवाल के पास पहुँचा। उसको खूब लम्बा सलाम कर बोला—हुजूर, शहर में ठगों का एक दल आया है जो डकैतों की तरह सब जगह मारपीट कर रहा है। आप शीघ्र घोड़े पर चढ़कर चलिए और अपनी आँखों से सब देखिए। ऐसा कहकर वह वहाँ से खिसक गया।

कोतवाल हाकिम के पास दौड़ा और सारी बात बतायी। हाकिम ने अपने दीवान को कोतवाल के साथ जाने को कहा। वे दोनों अन्धकार के प्रेत की भाँति आधी रात को हमारी सराय में आए। उनके साथ बाढ़ की तरह आदमी हमारी ओर दौड़े आ रहे थे।

दीवान और कोतवाल घर में आए और बिछौने पर बैठ गए। पहले उन्होंने मथुरा के दोनों ब्राह्मणों को बुलवाया। दोनों ब्राह्मणों के आने पर वे कौन हैं पूछा। उन्होंने मथुरावासी ब्राह्मण कहकर अपना परिचय दिया। तब उन्होंने माहेश्वरी वणिक की यात्रा के सम्बन्ध में पूछताछ की। माहेश्वरी बोले—वे एक कोठीवाले हैं। जौनपुर से आगरा जा रहे हैं। मुझसे भी ऐसा ही प्रश्न पूछा। मैंने भी कहा, मैं जौहरी हूँ, जवाहिरात का व्यापार करता हूँ। जौनपुर में मेरा व्यवसाय है। अभी आगरा जा रहा हूँ कारण वहाँ नेमीसाहु के साथ भागीदारी में पहले काम करता था। मैंने यह भी कहा जौनपुर में मेरा मकान है और यह माहेश्वरी और हम दोनों ही भद्र वणिक हैं। हमें जो ठग कहकर अभियुक्त किया गया है उसका आपके पास क्या कोई प्रमाण भी है ?

हमारी बात सुनकर वे फारसी में बात-चीत करने लगे। एक कहता था हम ठग हैं, दूसरा कहता था ये ठग नहीं हैं। जो कुछ कह रहे हैं वह सत्य है। अन्ततः कोतवाल बोला—इस बात को बतंगड़ बनाने से कोई लाभ नहीं है। इन्हें बाँधकर चालान कर दो। किन्तु, हाकिम के दीवान ने हमारा पक्ष लिया।

वह बोला—कोतवाल मूर्ख है। वास्तव में हम नहीं जानते ये कौन हैं ? वे जो भी हों सबेरा होने से पूर्व कुछ करना उचित नहीं है। कल सुबह ही सत्य का निर्णय करना सम्भव होगा कि ये कौन हैं।

तब आप जैसा चाहें वैसा ही करें—कोतवाल अन्ततः बोला। कल सबेरे तक अपेक्षा कीजिए फिर क्या होने से आपको विश्वास होगा देख लीजिएगा। मैं कोरारा, घातमपुर व बरी के लोगों को जानता हूँ। इन तीन शहरों पर ही मेरा अधिकार है। मैं अन्य किसी स्थान के आदमियों का विश्वास नहीं करूँगा। यह बात याद रखकर देखिएगा कि कोई इन्हें जानता है या नहीं ? मैं जाता हूँ।

इस बातचीत के बाद वे दोनों चले गए। हमारे चारों ओर पहरेदार बैठा दिए और कह गए—कल सबेरे वे पुनः आएँगे।

सारी रात हमें नींद नहीं आयी। इस विपत्ति से कैसे उद्धार हो सकता है इस विषय में मैं माहेश्वरी से बातचीत करने लगा। रात जैसे खत्म ही नहीं हो रही थी। सुबह होने के एक घण्टा पूर्व हठात् माहेश्वरी को एक आदमी याद आ गया। वह अचानक बोल उठा—मेरे छोटे भाई हरि के साले वरी में रहते हैं। अब मुझे सब याद आ गया। कारण बारात के साथ मैं भी आया था।

मैं बोला—तब मूढ़ की भाँति इतनी देर चुप क्यों थे ? वह सफाई देने के स्वर में बोला—डर के मारे सब कुछ भूल गया था, अभी याद आया है। अब भय की कोई बात नहीं है।

मैं भी आश्वस्त हुआ किन्तु पूर्णतः नहीं। मेरे मन में तो रह-रहकर यही आ रहा था माहेश्वरी की भूल भी हो सकती है।

भोर हुआ भी नहीं कि कई सैनिक आकर हाजिर हो गए। इन्हें कोतवाल ने भेजा था। उनके साथ हम १६ लोगों के लिए १६ शूली लेकर कुछ कुली भी उपस्थित हुए। जिस शूली पर चढ़ाकर हमें मारा जाना था वह सराय के पास ही रखी गयी। सैनिक हमारी ओर देखकर बोले—तुम १६ ठगों के लिए १६ शूली आयी है।

इसके आधे घण्टे पश्चात् ही कोतवाल और दीवान आ पहुँचे। उनके साथ गाँव के बहुत से लोग भी आए। वे हमलोगों के पास पहुँचकर हमारी आलोचना करने लगे। मैंने कहा—वरी में हमारे आत्मीय स्वजन हैं जो कि हमें पहचान सकते हैं। दीवान जो कि हमारा पक्ष ले रहा था वह खूब प्रसन्न

हुआ और बोला—खूब अच्छा हुआ। इतनी देर के पश्चात् तुम लोग कुछ ऐसा बोले हो जो काम का है। हमारे साथ वरी चलो वहीं सच झूठ प्रकाश में आएगा। माहेश्वरी अपने घोड़े पर चढ़ा। दीवान उसके पीछे-पीछे घोड़े पर चढ़कर चला। वे माहेश्वरी के आत्मीय के घर पहुँचे। वहाँ निस्सन्देह रूप से यह प्रमाणित हो गया कि हम ठग नहीं हैं।

माहेश्वरी वरी में रह गया दीवान लौट आया। उसने आकर हमसे क्षमा माँगी। बोला साहू, आपलोगों को जो कष्ट दिया उसके लिए क्षमा करें।

मैंने भी समयोचित भाव से नम्र उत्तर दिया—दीवान साहब, आप हैं हाकिम के आदमी। जो कुछ घटित हुआ उसके लिए स्वयं को दोषी न मानें। जो कुछ होना था हो गया। हमारे पूर्व जन्म के कर्म ही इसके जिम्मेवार है आपका कोई दोष नहीं है।

कोतवाल और दीवान चले गए। मैंने स्वस्ति की श्वाँस ली। अब उस ब्राह्मण ने मुँह खोला। बोला—हमारे रुपयों का क्या होगा? अतः इस विषय में कुछ किया जा सकता है कि नहीं जानने के लिए मुगल कर्मचारियों के पास गया और उन्हें भेंट करने के लिए सात किलो सुगन्धित तेल लिया। यह तेल फूलों के सत से बनाया हुआ बहुत दामी था। मैं हाकिम, दीवान और कोतवाल के पास गया एवं पद और मर्यादा के अनुसार तेल उपहार में दिया।

जब देखा कि वे मेरे प्रति सदय हैं तब शराफ की जालसाजी उन्हें बतायी और उसे पकड़ने को कहा क्योंकि असली दोषी वही है। उनसे रुपया अदा करने की बात भी कही। सबकुछ सुनकर एक मुगल कर्मचारी बोला—मैंने इसके पूर्व ही सब खबर ली है एवं तुम जो बोल रहे हो उसकी सच्चाई भी मुझे ज्ञात है। सच तो यह है कि तुम्हारे यहाँ आकर कहने के पूर्व ही मुझे सब मालूम हो गया। किन्तु शराफ तुम्हारे रुपये लेकर हमें अभियोग बतलाकर उसी रात हवा हो गया। अब उसे खोजा नहीं जा सकता। फिर कुछ रुककर बोला—रुपयों की बात अब भूल जाओ। तुम बच गए और स्वतन्त्रतापूर्वक घूम रहे हो इसके लिए भगवान को धन्यवाद दो और जाकर बन्धु बान्धवों के मध्य मिठाई वितरित करो।

समझ गया रुपये वसूल करने का एक मात्र उपाय है प्रभाव और प्रताप जबकि हमारे पास दोनों में से कोई भी नहीं है। क्योंकि यहाँ हम आगन्तुक हैं अतः अधिक कुछ न कहकर सराय लौट आया और भगवान को धन्यवाद दिया कारण जो कुछ घटा वह बीत गया। ब्राह्मणों से कहा—तुम्हारे रुपयों के आने की कोई राह नहीं है।

माहेश्वरी मित्र भी शाम को लौट आए। हमने एक साथ खाना-पीना किया और मृत्यु के मुँह से बचने की खुशी मनायी। सुबह के समय पुनः यात्रा प्रारम्भ की। इस भयानक जगह को छोड़ने की प्रसन्नता हुई। लगा हम मृत्यु-मुख से दूर जा रहे हैं।

हमारी यात्रा के द्वितीय दिन ही एक भयानक संवाद मिला कि मेरे प्रिय मित्र नरोत्तम की मृत्यु हो गयी। उसके पिता बेनीदास की चिट्ठी से यह खबर मिली। मैं मारे दुःख के बहुत समय तक फूट-फूट कर रोता रहा। यहाँ तक कि रोते-रोते मूर्च्छित हो गया। शेष यात्रा दुःख में ही समाप्त हुयी। मैं निरन्तर रोता रहता। मेरे साथी मुझे सान्त्वना देने की चेष्टा करते लेकिन सब व्यर्थ होता। मुझे किसी भी प्रकार सान्त्वना नहीं मिलती।

समस्त पाप का मूल है लोभ
व्याधि का मूल अजीर्ण।
मृत्यु का मूल है यह देह
और दुःखों का मूल प्रेम॥

क्रमशः दुःखावेग कम हुआ। स्वयं को संयत किया। हम आगरा के समीप हो रहे थे। यमुना के किनारे पहुँचे। शहर यमुना के उस पार था। हमारे ब्राह्मण बन्धुओं को यहीं से विदा होना था। रुपयों का शोक मानों उन्हें नवीन रूप से घेरने लगा। पैसे के बिना उनकी अवस्था मृतक की-सी थी। वे राह रोक कर जमीन पर लोट गए। हमलोगों से रुपये देने को कहा। नहीं देने पर आत्म-हत्या करने पर उतारू हो गए। अतः अपनी जेब से क्षति-पूर्त्ति के अतिरिक्त दूसरी कोई राह ही नहीं थी। माहेश्वरी ने बारह रुपये दिए और मैंने तेरह रुपये। ब्राह्मण खूब प्रसन्न होकर हमें आशीर्वाद देकर चले गए। ब्राह्मणों को क्षति सहन करने देने में जो पाप था उससे मुक्त होकर हम प्रसन्न हुए।

अन्ततः मैंने और माहेश्वरी ने एक दूसरे से विदा ली। जब घर पहुँचा तो स्वयं को संयत न रख सका। मृत मित्र के लिए पुनः रोने लगा। बहुत समय लगा उस शोक को शान्त करने में। सन्ध्या के समय हिसाब-किताब खतम करने के लिए साहू सबल सिंह मोथिया के घर गया। किन्तु उन्हें हिसाब-किताब देखने का समय ही कहाँ? मैं रोज उनके घर जाता और देखता उन्हें हिसाब देखने की फुरसत ही नहीं रहती। साहू अपने वैभव में मस्त थे। जब भी जाता देखता कलाविद उन्हें घेर कर बैठे हुए हैं। कोई

पखावज पर कण्ठ गीत गा रहा है कोई यन्त्र पर संगीत। वे हर समय राजा बादशाहों की तरह पारिषदों से घिरे बैठे रहते और उन पर दक्षिणा एवं धन की वर्षा करते। कवि चारण भाट उनके सम्मुख खड़े होकर कविता सुनाता, कोई प्रशस्ति गीत गाता। जिस वैभव और ऐश्वर्य के मध्य वे सुबह से शाम तक बैठे रहते उसका वर्णन करूँ ऐसी मेरे पास भाषा ही नहीं है।

उनके उस ऐश्वर्य को देखकर मैं अभिभूत हो गया किन्तु सोचने लगा—यदि इस प्रकार चलता रहा तब तो मेरा हिसाब का काम कभी खत्म नहीं होगा। एक सप्ताह से ऊपर हो गया मुझे उनके दरबार में जाते और जब जाता तब वे कहते आज नहीं कल होगा। उन्होंने मुझे हिसाब की बात किसी समय भी नहीं कही। मेरे साथ जो हिसाब-किताब खत्म करना है उसका तो मानों उन्हें कोई भान ही नहीं था।

इन्तजार करने के सिवाय मैं कर भी क्या सकता था। यह यातना भी मेरे भाग्य में लिखी थी। हर घण्टा एक महीना लगता, प्रतिदिन वर्ष। किन्तु साहू के पास तो समय का कोई मूल्य ही नहीं था। विषय में मदमस्त व्यक्ति के पास कब सूर्य उदय हुआ कब अस्त इसका लेखा-जोखा ही नहीं रहता।

इस प्रकार व्यर्थ ही बहुत दिनों तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। फिर एक दिन मेरे एक पुराने मित्र अंगासाह से मिलना हुआ। इसे मेरा भाग्य ही कहना होगा कारण अंगासाह नरोत्तम के पिता वेणीदास के चाचा थे। जिनके साथ सबल सिंह की एक बहन की शादी हुई थी। वे उदार हृदयी और अच्छे आदमी होने के साथ-साथ गुणवान भी थे। मैंने उन्हें अपनी समस्या बतायी। इसके लिए केवल मैं ही कष्ट नहीं पा रहा हूँ नरोत्तम के पिता भी पा रहे हैं। हम क्या करें समझ नहीं पा रहे हैं। मैंने उनसे मेरा होकर सबल सिंह को समझाने के लिए कहा ताकि वे मुझे समय देकर हिसाब-किताब समाप्त करें। और यह भी कहा जब तक आगे का हिसाब समाप्त नहीं हो जाता है तब तक पूर्व की शर्तें भी मुझपर लागू रहती है और मैं उनसे छुटकारा नहीं पा रहा हूँ।

अंगासाह ने सबल सिंह से उसदिन ही बात करी। कागज पत्र मँगवाए। हम दोनों की बहियों का मिलान किया गया और हिसाब कर दिया गया। समाप्ति पत्र पर नरोत्तम के पिताजी एवं साहू सबल सिंह ने हस्ताक्षर किए। इस व्यापार में अब भविष्य में मेरे विरुद्ध कोई भी अभियोग नहीं लगा सकेगा। कारण हमारे दोनों साझेदारों के हस्ताक्षर करी दलील हमारे पास रही। हम

कोई भी अब पूर्व शर्त्त के अधीन नहीं रहे। मैं साझेदारी के बन्धन से मुक्त होकर प्रसन्नतापूर्वक घर लौट गया।

यह घटना विक्रम संवत् १६१३ अग्रहण कृष्ण पक्ष की थी। मेरे सुकर्मों का उदय हो रहा था। मैंने नया मकान किराए पर लिया। जो कपड़ा जौनपुर में खरीदा था और जिस ब्राह्मण के पास रख आया था उसने विश्वस्त आदमी द्वारा वह मुझे भेज दिया। मैंने एक बही बनायी और जो-जो मेरा था वह उसमें लिख लिया और कपड़ा बेचने के लिए बाजार जाने लगा। मैंने मुनाफा कमाया। अब मेरा मूलधन बढ़ने लगा।

उसी समय आगरा में एक महामारी फैली। इस महामारी को पहला प्लेग कहा जाता है। इससे शरीर का कोई एक हिस्सा फूल जाता और मृत्यु निश्चित थी। इसे गाँठ रोग भी कहा जाता। इसका कोई उपचार नहीं था। हाकिम लोग भी चूहे की भाँति मरने लगे। देखते-देखते यह रोग शहर में सर्वत्र फैल गया। दूषित हो गया है समझकर लोग खाने की वस्तु खाने से भी डरने लगे। मैंने भी शहर छोड़कर निकट के ग्राम अजीजपुर में आश्रय लिया। अजीजपुर एक छोटा-सा सुन्दर गाँव था। यहाँ के अधिकांश अधिवासी ब्राह्मण थे। मैंने एक बनिए के घर के पास मकान लिया और अकेला ही रहने लगा। अजीजपुर रहने के समय मैंने एक घृणित कार्य किया जो कि मेरे पूर्व कर्मों का ही परिणाम था। किन्तु उस विषय में कुछ नहीं कहूँगा। उसका उल्लेख नहीं करना ही वांछनीय है।

[क्रमशः

जैन पत्र-पत्रिकाएँ : कहाँ/क्या

अमर भारती || अप्रैल १९८३

उपाध्याय श्री अमर मुनि के प्रवचनों के अतिरिक्त इस अंक में है— 'भगवान महावीर का अहिंसा सन्देश' (स्व० अगरचन्द नाहटा), 'त्रिरत्न की साधना' (डा० रामदेव राम) ।

कथालोक || अप्रैल १९८३

इस अंक में है 'जीवन दर्शन' (उपाध्याय श्री अमर मुनि), जैन कथा 'चेलना हरण' (गणेश ललवानी), 'ज्ञान पात्रता' (श्री उदय मुनि) ।

जिनवाणी || अप्रैल १९८३

आचार्य श्री हस्तीमल जी के प्रवचनों के अतिरिक्त इस अंक में है 'क्षमा : स्वरूप और महत्व' (पी० एम० चौरड़िया), 'कर्मयोगी व तपोनिधि भगवान महावीर' (हंसा फूलचन्द बुंदेला), 'तीन शल्य' (वसन्त ना० शाह), 'केवली समुद्घात' (केवलमल लोढ़ा) ।

जैन जगत || अप्रैल १९८३

संपादकीय के अतिरिक्त इस अंक में है 'महावीर की अपरिग्रह-मूलक दृष्टि' (डा० प्रेम सुमन जैन), 'Mahavira : The Emancipator of Women' (Dr. Jyoti Prasad Jain).

तुलसी प्रज्ञा || जनवरी-मार्च १९८३
योग पाठ्यक्रम विशेषांक-२

इसमें उत्तरज्झयणाणि तथा मोक्खपाहुड़, समय-सार (प्रथम अधिकार), हठयोग प्रदीपिका तथा मनोनुशासनम् से योग विषयक सामग्री का संकलन किया गया है ।

श्रमण || अप्रैल १९८३

इस अंक में है 'बन्ध के कार्य में मिथ्यात्व और कषाय की भूमिकाएँ' (डा० रतनचंद जैन), 'वैराग्यमूलक एक ऐतिहासिक प्रेम काव्य तरंगवती' (गणेश प्रसाद जैन) ।

Vol. VII No. 1 : Titthayara : May 1983
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. R. N. 30181/77

Hewlett's Mixture

for

Indigestion

DADHA & COMPANY

and

C. J. HEWLETT & SON (India) Pvt. LTD.

22 STRAND ROAD

CALCUTTA-700 001